Kumar
Date: 29/7/19

पाठ-५

मन जीते जग जीत

शब्द	अर्थ
परिश्रमी	मेहनती
अव्वल	प्रथम
चुनौती	ललकार
मरियल	दुबला-पतला, कमज़ोर
इम्तहान	परीक्षा
परंपरा	रीति
अचकचाना	हिचकना
तिकड़म	चाल, युक्ति, छल-चातुर्य
दस्तक	खटखटाना
दरख्वास्त	अर्ज़ी, प्रार्थना
नौबत	स्थिति, हालत, दशा
मलाल	अफ़सोस ; दुख
हुलास	उत्साह । उल्लास
जोश	उत्साह

मुस्तैदी	चुस्ती, तेज़ी
दस्तखत	हस्ताक्षर
ठसक	चाल-ढाल, घमंड-बड़प्पन से भरी शारीरिक चेष्टा।

मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)

1. परिश्रमी
2. अव्वल
3. मोर्चा
4. चुनौती
5. इम्तहान
6. पर्चों
7. अंग्रेज़ी
8. यूनिफार्म
9. काबिलियत
10. कैल्क्युलेटर
11. ट्यूशन
12. प्रतिशत
13. फ्री-शिप,
14. परीक्षा
15. प्रतिद्वंद्वी

{प्रश्न/उत्तर}

① लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) प्र०1 अमित के आगे शानू धूल चाट गया, कैसे?
उ०1 अमित ने मासिक तथा तिमाही परीक्षा में शानू को पीछे कर धूल चाटने पर मजबूर कर दिया।

प्र०2 पहली रैंक पाना अमित की मजबूरी क्यों थी?
उ०2 पहली रैंक पाना अमित की मजबूरी इसलिए थी, क्योंकि अगर वह पहली रैंक साथ साठ प्रतिशत से ऊपर अंक न लाता तो उसकी फ़ीस माफ़ न होती और किताबों का जुगाड़ न हो पाता

और वह गरीबी के कारण फ़ीस न जुटा पाता और विद्यालय में आगे की पढ़ाई न कर पाता।

प्र०3 अमित को टी.सी. क्यों नहीं दी जा सकती थी?
उ०3 अमित को टी.सी. इसलिए नहीं दी जा सकती थी, क्योंकि उसकी पिछली फ़ीस बकाया थी।

प्र०4 साठ प्रतिशत से ऊपर अंक पाने पर क्या होता था?
उ०4 साठ प्रतिशत से ऊपर अंक पाने पर बस-फ़ीस भी माफ़ हो जाती थी और किताबों का जुगाड़ भी हो जाता था।

प्र०5 प्रतिस्पर्धा क्यों ज़रूरी है? स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के क्या लाभ होते हैं?
उ०5 प्रतिस्पर्धा इसलिए जरूरी है, क्योंकि इससे हम स्वयं की क्षमताओं एवं कमियों का आकलन करते हैं। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के कई लाभ होते हैं; इससे हम अपनी कमियों को समझ कर उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और हम अपने को संवारकर उन लक्ष्यों तक पहुँच जाते हैं, जिसके बारे में हमने कभी सोचा भी न हो।

~~प्र०6 साठ प्रतिशत~~
प्र०6 प्रतियोगिता के माध्यम से हम स्वयं को दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं? कैसे?
उ०6 प्रतियोगिता के माध्यम से हम इस प्रकार स्वयं को दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं, कि हम अपने प्रतिद्वंद्वी से

ज़्यादा परिश्रम करते हैं, दिन-रात एक कर देते हैं और यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि हम उससे हर मामले में आगे निकल जाए।

ब दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

प्र०=1 शानू के लिए पहली रैंक जहाँ शान की बात थी वहीं अमित के लिए अपने होने न होने की चुनौती। क्यों?

उ०=1 शानू के लिए पहली रैंक जहाँ शान की बात थी वहीं अमित के लिए अपने होने न होने की चुनौती इसलिए थी क्योंकि शानू, बड़े घर का लड़का था, जिसे 'शिप' या फीस एक माफ़ी वगैरह की कोई जरूरत परवाह नहीं थी, परंतु अमित के लिए तो पहली रैंक लाना नितांत आवश्यक था, क्योंकि फ़ीस माफ़ी तथा किताब आदि के जुगाड़ से ही वह विद्यालय में पढ़ सकता था वरना नहीं।

प्र०=2 अमित ने स्कूल से जाने की दरख़्वास्त क्यों लगाई?

उ०=2 अमित ने स्कूल से जाने की दरख्वास इसलिए लगाई क्योंकि वह पहली रैंक न ला सका और विद्यालय के नियमानुसार उसकी ट्यूशन तथा बस-फ़ीस माफ़ न होती तथा किताबों आदि का जुगाड़ भी न हो पाता और अपनी ग़रीबी के कारण वह फ़ीस आदि का इंतज़ाम करने में असमर्थ था और चाह कर भी आगे की पढ़ाई किसी अच्छे विद्यालय में न कर पाता।

प्र०=3 छमाही परीक्षा में अमित से आगे रहने के बाद भी शानू क्यों उदास था?

उ०=3 छमाही परीक्षा में अमित से आगे रहने के बाद भी शानू इसलिए उदास था, क्योंकि उसने गलत तरीकों का प्रयोग कर परीक्षा में अमित से बाज़ी मारी थी; जैसे कि उसने गणित के पर्चे में कैलक्युलेटर का प्रयोग किया था तथा अंग्रेज़ी के पर्चे में सबकी नज़र बचाकर दस नंबर की नकल मारी थी।

प्र०=4 पहली रैंक लाने के बाद भी शानू क्यों चाहता था कि अमित स्कूल में वापस आए?

उ०=4 पहली रैंक लाने के बाद भी शानू इसलिए चाहता था कि अमित स्कूल में वापस आएँ, क्योंकि एक तो उसका मन आत्म-ग्लानि से भरा हुआ था कि उसकी वजह से ही अमित ने स्कूल छोड़ दिया; दूसरे, वह चाहता था कि उसे एक ऐसा मज़बूत प्रतिद्वंद्वी मिले, जिससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कर वह स्वयं को भी ऊपर उठा सके।

प्र०=5 उधार और उपकार में क्या अंतर है? अपने शब्दों में लिखिए।

उ०=5 'उधार' का तात्पर्य कोई वस्तु आदि किसी अन्य व्यक्ति को एक निश्चित अंतराल के लिए देने के बाद उससे वापस लेना होता है तथा 'उपकार' से आशय जिसे 'एहसान' भी कहते हैं, उसे कोई वस्तु आदि किसी को प्रदान कर फिर वापस न लेना, कहा जाता है।

Kumar
Date: / /
Page:

प्र०=6 दगा - फरेब से पाया गया दरजा बेकार है और कमजोर मुकाबले की जीत में भी वह मजा नहीं, जो मज़बूत प्रतिद्वंद्वी के सामने पिछड़ जाने में है।

उ०=6 यह बात सत्य है कि, बेईमानी से पाया गया स्थान और कमजोर प्रतिद्वंद्वी से जीतने में वह आनन्द नहीं, जो किसी मज़बूत प्रतिद्वंद्वी से मुकाबला कर हार जाने में है, क्योंकि अनुचित कार्य तथा कमजोर प्रतिद्वंद्वी के समक्ष हम अपनी संपूर्ण क्षमताओं या प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर पाते और एक समय बाद हम उस क्षमता को खो बैठते हैं।
वहीं दूसरी ओर जब हम अपना शत-प्रतिशत देकर भी किसी मज़बूत प्रतिद्वंद्वी से हार भी जाएँ, तो ~~इसे~~ हमें यह संतोष रहता है कि हमने अपना उच्चतम प्रदर्शन किया और भविष्य में इससे भी बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास करेंगे।

Atish
16/08/19

Kumar
Date: / /
Page:

शब्द पाठ·

नाम की इच्छा

शब्द	अर्थ
हॉल्ट	रुकना
तसल्ली	सांत्वना
खातिर	आवभगत
श्रेणी	कक्षा
बेजा	अनुचित
होड़	मुकाबला
मनस्थ	मन में स्थापित करना
अतीत	बीता हुआ समय
विद्रूपता	कटाक्ष
संचित	संचय
आग्रह	ज़िद
विनय	प्रार्थना
उत्तेजना	प्रेरणा
आहत	चोट खाया हुआ

Kumar
Date: / /
Page:

मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)

ड्रिल	विद्रूपता
डबलमार्च	निस्सिंतान
ऑर्डर	एंबुलेंस
हाल्ट	म्यूनिसिपलिटी
ताँगा	स्ट्रेचर
तसल्ली	क्लर्की
महत्वाकांक्षा	

{प्रश्न/उत्तर}

प्र०=1 बचपन से गुरदास का क्या सपना था?

उ०=1 बचपन से गुरदास का यही सपना था कि चाहे जैसे भी हो लोग उसका नाम ~~च~~ जान जाएँ

प्र०=2 अनंतराम को स्कूल में सब कैसे ~~जा~~ जान गए।

उ०=2 ड्रिल के दौरान डबलमार्च करते समय अनंतराम के बेहोश हो जाने के कारण ~~३~~ सब उसे जान गए।

प्र०=3 गुरदास अपनी तुलना किससे और क्यों करता था?

उ०=3 गुरदास अपनी तुलना अनाज की बोरी के करोड़ों एक ही से दानों में से एक साधारण दाने से करता था क्योंकि, उसे लगता था कि भविष्य में वह बेनाम ~~ह~~ हो, इस ~~दुनिया~~ ~~व~~ ~~व~~ दुनिया से कूच कर जाएगा।

प्र०=4 गुरदास ने अखबार क्यों खरीदा?

Kumar
Date: / /
Page:

उ०=4 अपने मोहल्ले और 'प्लेग' की बिमारी से ग्रसित दुलारे की खबर पढ़ने के लिए उसने अख़बार खरीदा।

प्र०=5 मोटर दुर्घटना में आहत ~~स~~ गुरदास को अदालत ने क्या कहकर हर्जाना दिलवाने से मना कर दिया?

उ०=5 मोटर दुर्घटना में आहत गुरदास को अदालत ने यह कहकर हर्जाना दिलवाने से मना कर दिया कि अख़बार में नाम छपवाने के लिए ही वह जान-बूझकर मोटर के सामने आ गया

प्र०=6 क्या अख़बार में नाम छपनेवाले ही प्रसिद्ध व महान होते हैं? ~~उत्तर~~ उदाहरण सहित तर्क दीजिए।

उ०=6 नहीं यह बात सत्य नहीं है कि अख़बार में नाम छपनवाले ही प्रसिद्ध व महान होते हैं क्योंकि केवल महान और बड़े काम करके ही हम अख़बारों की सुर्खियों में नहीं आते बल्कि कभी गलत कामों, कभी दुर्घटना, कभी मार-पीट आदि की वजह से भी लोगों का अख़बार में मुख्य पृष्ठ पर आ जाता है।

{दीर्घ उत्तरीय प्रश्न}

प्र०=1 इतिहास में विशेष रुचि होने पर भी गुरदास को कक्षा में कभी शाबाशी क्यों नहीं मिली?

उ०=1 इतिहास में विशेष रुचि होने पर भी गुरदास को कक्षा में कभी शाबाशी नहीं मिली क्योंकि भले ही उसके मस्तिष्क में ऐतिहासिक किरदार जीवन्त होकर चक्कर काटते, जिससे उसके मानस-पटल पर वे घटनाएँ

सचित्र हो जाती थी परन्तु सभी महत्वपूर्ण तारीखो और सन उसे याद नहीं रहते थे इसलिए कभी भी उसका नाम कक्षा मे पुकारा नहीं जाता था।

प्र०=2 वकील साहब की सहानुभुति से झुकी आँखे सहसा क्यों खुल गई?

उ०=2 वकील साहब की सहानुभूति से झुकी आँखे सहसा इसलिए खुल गए क्योंकि, गुरदास ने उनसे यह कहा कि - वह अपना नाम अखबार में छपवाना चाहता है और लोगों की निगाहों मे आना चाहता है। यह बात वकील साहब के लिए बहुत मुश्किल नहीं थी और उनके मन मे अपना पक्ष बचाने के लिए अलग ही खिचड़ी पक रही थी।

प्र०=3 वकील साहब ने गुरदास की अख़बार मे नाम छपवाने की इच्छा का किस तरह फ़ायदा उठाया?

उ०=3 वकील साहब ने गुरदास की अख़बार मे नाम छपवाने की इच्छा का पूरी तरह से फ़ायदा उठाया, उन्होंने, कचहरी में न्यायधीश के समक्ष यह साबित कर दिया कि गुरदास अख़बार मे नाम छपवाने की की ख़ातिर ही जान-बूझ कर मोटर के सामने आ गया।

प्र०=4 गुरदास के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उ०=4 गुरदास के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ थी। -

1: वह सदैव चाहता था, कि वह किसी भी तरह लोग उसके नाम को जान जाएँ।

2: वह एक सिरफिर और सनकी किस्म का इन्सान था।

3: इतिहास के विषय मे उसकी इतनी रूचि थी, की उसके पात्र उसके मस्तिष्क मे जीवन्त हो जाते थे।

4: वह एक औसत दर्जे का छात्र था।

5: वह एक सरल और सीधा-सा। इन्सान था।

प्र०=5 गुरदास बेचारा दोनों तरफ़ से बीच में रह जाता।

उ०=5 गुरदास अपनी कक्षा का न तो सबसे तीव्र छात्र था और न ही सबसे कमजोर इसलिए सबसे सही और पहले उत्तर देने के लिए न तो उसका नाम पुकारकर उसे प्रोत्साहित किया जाता था और न ही कभी उत्तर न देने या गलत उत्तर देने के लिए सजा बतौर उसका नाम पुकारा जाता था।

प्र०=6 गुरदास ने अख़बार में अपना मुँह ढाँप लिया। किसी को अपना मुँह कैसे दिखाता।

Kumar Date: / / Page:

उ०-6 गुरदास भले ही जान-बूझकर मोटर के सामने नहीं आया था, परंतु वकील साहब ने उसकी अखबार में नाम छपवाने की तीव्र इच्छा का फ़ायदा उठाते हुए उसके केस को ऐसा तोड़ा-मरोड़ा कि न्यायालय में यह साबित हो गया कि वह जान-बूझकर अखबार में नाम छपवाने की खातिर मोटर के सामने कूद पड़ा।

Kumar Date: 2|9|19 Page:

पाठ-6 पहले अपना अध्ययन करो

शब्द	अर्थ
अध्ययन	पढ़ाई, पठन (स्टडी)
बंधु	मित्र, रिश्तेदार, सहयोगी
अभिमान	घमंड, अहंकार
सुभाषित	सूक्ति, सुंदर कथन
घड़िया	निर्माण/रचना करनेवाला
जड़िया	एक वस्तु को दूसरी में बैठाने/जमानेवाला
सिद्धि	दक्षता, निपुणता
निरभिमान	विनम्र, सरल
पर्यंक	पलंग, बड़ी खाट
शयन	निद्रा, सोना
भोग्य	जिसका भोग (अयोग) किया जाए
क्रूर	निर्दयी, परपीड़क (क्रुअल)

मानक वर्तनी एवं वाचन (उच्चारण)

अध्ययन
व्यर्थ
विनम्र
निरभिमान
चर्थक
सुभाषित
सिद्धि
भोग्या

कौर
अहं

लघु उत्तरीय प्रश्न –:

प्र०=1 कवि किसे सावधान कर रहे हैं?
उ०=1 कवि आम -जन को, जो तमाम बुराइयों से ग्रसित है, उसे सावधान कर रहे हैं।

प्र०=2 कवि किस बात पर बल दे रहे हैं?
उ०=2 कवि दूसरों पर आरोप लगाने से पहले आत्म-चिन्तन करने पर बल दे रहे हैं।

प्र०=3 व्यक्ति किसका अभिमान करता है?
उ०=3 व्यक्ति अपने गुणों, ज्ञान, मान-सम्मान, वैभव आदि का अभिमान करता है।